लिल्ली घोड़ी का नाच किस-किसने देखा

कुछ समय पहले तक गांव-देहात के साथ शहरों में भी शादी-ब्याह या उत्सव के मौके पर अक्सर लिल्ली घोड़ी का नाच देखने को मिल जाया करता था। कई पुरानी फिल्मों में भी लिल्ली घोड़ी का नाच दिखाया गया है। लेकिन लोक नृत्य की परम्परा लिल्ली घोड़ी अब लुप्त सी होती जा रही है। लिल्ली घोड़ी के नाच में काठ से घोड़ी का चेहरा बनाया जाता है, जिसे लेकर कलाकार इस तरह चलता, घूमता और झूमता है, जैसे घोड़ी पर बैठा हुआ नृत्य कर रहा है।

काठ की तलवार से रणक्षेत्र का योद्धा बन जाता कलाकर

लिल्ली घोड़ी के नाच में कई बार नृतक अपने दूसरे हाथ में लकड़ी की तलवार लेकर उसे इस तरह घुमाता रहता है जैसे कोई योद्धा रणक्षेत्र में युद्ध कर रहा हो। इसके बाद नर्तक अपने पैरों पर नृत्य करता हुआ ऐसा अभिनय करता है, जैसे कोई घोड़ी अपनी पीठ पर घुड़सवार को बिठाकर स्वयं उछल-कूद कर रही हो।

लिल्ली घोड़ी नृत्य को भारत के विभिन्न प्रांतों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है। जहां उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश में इसे लिल्ली घोड़ी कहा जाता है, वहीं राजस्थान व गुजरात में पहचान कच्छी घोड़ी की है। गोवा में इसे 'घोड़मोदनी' अर्थात मनोरंजन करने वाली घोड़ी कहते हैं। उड़ीसा में इसका नाम 'चैती घोड़ी' है। 'लिल्ली' शब्द 'लीला' से बना है जिसका अर्थ है, अभिनय। इस प्रकार लिल्ली घोड़ी का अर्थ हुआ, 'लीला करने वाली घोड़ी'। लिल्ली घोड़ी लकड़ी, बांस, घास और कपड़े से बनाई जाती है। यह बिना पैरों वाली घोड़ी का एक खोखला ढांचा होता है, जिसकी पीठ से लेकर पेट तक आरपार बड़ा गोल छेद रखा जाता है। यह भाग इतना चौड़ा बनाया जाता है कि नर्तक पुरुष या स्त्री नीचे से सिर डालकर घुस सके तथा अपना कमर से ऊपर का भाग काठी के ऊपर निकाल सके। काठी का बाहरी भाग रंगीन कपड़ों की झूल एवं झालरों से सजाया जाता है। काले रंग की पूंछ लगाई जाती है और कपड़े एवं खपच्चियों की सहायता से घोड़ी का मुख बनाकर उसे माला, नकेल, कलंगी से सजाया जाता है।

- देश के हर हिस्से में पाई जाने वाली लोक नृत्य की परम्परा अब लुप्त होने के कगार पर
- लकड़ी, बांस, घास और रंगीन कपड़े से बनाया जाता है, बिना पैरों की घोड़ी का खोखला ढांचा

नर्तक के हिलने पर हवा से बातें करती दिखती है घोड़ी

- घोड़ी की काठी पर रंगीन बेल-बूटों वाली लम्बी-चौड़ी झूल डाली जाती है, जो नर्तक के पैरों को ढकती हुई जमान तक लटकती है। नृत्य करते समय नर्तक इस काठी में घुसकर अपना धड़ भाग काठी के ऊपर निकाल लेता है तथा काठी को कसकर अपनी कमर के चारों ओर बांध लेता है। जब वाद्य यंत्र बजते हैं तो नर्तक घोड़ी की लगाम अपने हाथ में पकड़कर इस प्रकार हिलाता और झूमता है जैसे किसी घोड़ी को हांका जाता है।

लेखक: प्रदीप तिवारी

मौत के मुहाने से खींचकर लौटा दी जिंदगी

- जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज, कानपुर के प्राचार्य प्रो. संजय काला ने सुनाई दुर्लभ कैंसर की सफल सर्जरी की कहानी
- फाइब्रोमेक्सॉइड सार्कोमा कैंसर से पीड़ित था मरीज, सर्जरी के बाद भी बन जाता था ट्यूमर

'मेडिकल लाइफ में यूं तो तमाम जटिल ऑपरेशन किए हैं, लेकिन जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज के सर्जरी विभाग में किया गया दुर्लभ कैंसर का सफल ऑपरेशन जल्दी भुलाया नहीं जा सकता है। यह कुछ अलग ही तरह का मामला था। मेडिकल कॉलेज का प्राचार्य होने के नाते काम काफी चुनौती पूर्ण था। इसके चलते सर्जरी से पहले वरिष्ठ चिकित्सकों से ऑनलाइन सलाह भी लेनी पड़ी। इसके बाद मरीज के हर अंग, नसों व टिश्यू को ध्यान में रखते हुए दुर्लभ कैंसर की कमांडो सर्जरी की। इसी के साथ जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज ने नया इतिहास रच दिया। इस सफल ऑपरेशन ने यह तथ्य मजबूत कर दिया कि भारतीय डॉक्टर हर चुनौती और जटिल ऑपरेशन को कामयाब बनाने में सक्षम हैं।'

मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. संजय काला

मामला यह था कि फर्रुखाबाद निवासी 65 वर्षीय बुजुर्ग (मिठाई दुकानदार) ने मुंह में गांठ होने पर एक निजी अस्पताल में इलाज कराया, जहां ऑपरेशन करके उसकी गांठ हटा दी गई। लेकिन एक माह बाद फिर से उसके मुंह में गांठ पनप गई। इस पर उन्होंने कानपुर के उर्सला अस्पताल में इलाज कराया। यहां बायोप्सी जांच होने पर गांठ में कैंसर के लक्षण मिले। उर्सला में डॉक्टरों ने सर्जरी करके मुंह से गांठ निकाल दी। इससे बुजुर्ग को कुछ दिन के लिए आराम मिला, लेकिन जल्दी ही उनके मुंह में गांठ फिर से उभर आई। इस बार किसी ने हैलट अस्पताल में इलाज कराने की सलाह दी। पीड़ित बुजुर्ग मरीज यहां आए। उनकी केस हिस्ट्री मेरे पास आई। कई आवश्यक जांचें कराकर इलाज शुरू किया। बायोप्सी में गाल व जबड़े में कैंसर का फैलाव मिला। बुजुर्ग का मुंह भी काफी कम खुल रहा था। जांच रिपोर्ट के अध्ययन से पता चला कि मरीज फाइब्रोमेक्सॉइड सार्कोमा नामक कैंसर से पीड़ित है। यह कैंसर गिने चुने लोगों को ही होता है।

ऐसे में मरीज और उनके परिवारीजनों को रोग की जानकारी देकर सर्जरी की अनुमति ली। डॉ. आशीष, डॉ. पारुल, प्लास्टिक सर्जन डॉ. प्रेम शंकर व एनास्थिसिया की डॉ. यामिनी को साथ लेकर मर्ज का निदान करने के लिए ऑपरेशन की योजना बनाई। पांच घंटे समय लगा और सर्जरी सफल रही।

काटना पड़ा मुंह के नीचे का हिस्सा

- इस केस में पीड़ित की कमांडो सर्जरी की गई। कैंसर की वजह से बुजुर्ग के दांत सड़कर निकल चुके थे। कैंसर मुंह के पूरे हिस्से को प्रभावित न कर सके, इसलिए ऑपरेशन में मुंह के नीचे का हिस्सा काटना पड़ा। इसके बाद छाती का मांस प्लास्टिक सर्जरी के माध्यम से वहां लगाया गया। दुर्लभ ट्यूमर (फाइब्रोमेक्सॉइड सार्कोमा) ठीक प्रकार से न निकाला जाए तो फिर से पनप जाता है। इसलिए गांठ के साथ जबड़ा भी निकालना पड़ा। डॉ. प्रेम शंकर ने प्लास्टिक सर्जरी करके मरीज का नया जबड़ा बनाया। आपरेशन को तीन वर्ष हो चुके हैं और मरीज पूरी तरह से स्वस्थ है।

सोने जैसी विरासत पर साहित्य की सुगंध

पीतलनगरी, मुरादाबाद में साहित्य सृजन दस्तावेजी होने के साथ रखता है अलग पहचान

मुगल सम्राट शाहजहां के शासनकाल में सूबेदार रुस्तम खां द्वारा शहजादा मुराद के नाम से बसाया गया मुरादाबाद यूं तो देश-दुनिया में पीतलनगरी के रूप में प्रसिद्ध है, लेकिन यहां के साहित्यकारों के लेखन से भी शहर की पहचान तथा ख्याति समृद्ध रही है, चाहे वह हिन्दी साहित्य का क्षेत्र हो या उर्दू अदब की दुनिया। दोनों ही भाषाओं में महत्वपूर्ण साहित्य-सृजन दस्तावेजी तो रहा ही है, अपनी एक अलग पहचान भी रखता है। साहित्यिक क्षेत्र में माहेश्वर तिवारी के नाम का पर्याय रहे मुरादाबाद ने जहां एक ओर लाला शालिगराम वैश्य, स्वरूप चन्द्र जैन, पं.बलबीर प्रसाद मिश्र, पं.ज्वालादत्त शर्मा, पं.पुरुषोत्तम व्यास, ज्वाला प्रसाद मिश्र, दुर्गादत्त त्रिपाठी, अम्बालाल नागर, कैलाश चन्द्र अग्रवाल 'अधीर', मदनमोहन व्यास, दयानन्द गुप्त, ललितमोहन भारद्वाज, सुरेन्द्रमोहन मिश्र, प्रो. महेन्द्र प्रताप, रामअवतार त्यागी, दुष्यंत कुमार, डॉ. कुंवर बेचैन, शचीन्द्र भटनागर, पुष्पेन्द्र वर्णवाल, दिग्गज मुरादाबादी, रामलाल अन्जाना, ब्रजभूषण सिंह गौतम अनुराग, राजेन्द्र मोहन शर्मा श्रृंग, विख्यात व्यंग्य कवि डॉ. मक्खन मुरादाबादी एवं हुल्लड़ मुरादाबादी जैसे महत्वपूर्ण रचनाकार हिन्दी साहित्य को दिए हैं।

विदेशी विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जा रहीं साहित्य पर लिखी पुस्तकें

- वर्तमान हिंदी साहित्यकारों में जहां हिन्दी के प्राध्यापक रहे डॉ. रामानन्द शर्मा द्वारा रीतिकालीन काव्य के सन्दर्भ में लिखी गयीं कई पुस्तकें विदेशों के विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जा रही हैं, वहीं शताधिक मौलिक कृतियां लिखने वाले डॉ. महेश दिवाकर एवं डॉ. राकेश चक्र सहित चारों वेदों का काव्यानुवाद करने वाले साहित्यकार डा. अजय अनुपम, बाल साहित्यकार राजीव सक्सेना, साहित्यकार अशोक विश्नोई, हिन्दी और अंग्रेजी में समानरूप से सृजन करने वाले कवि डॉ. आरसी शुक्ल, योगेन्द्र पाल सिंह विश्नोई, डॉ. प्रेमवती उपाध्याय, डॉ. पूनम बंसल, डॉ. अर्चना गुप्ता, वीरेन्द्र सिंह वृजवासी, श्रीकृष्ण शुक्ल व नई पीढ़ी के मयंक शर्मा, राजीव प्रखर, जितेन्द्र जौली, हेमा तिवारी भट्ट, मीनाक्षी ठाकुर, दुष्यंत बाबा, कमल शर्मा, ममता सिंह, कंचन खन्ना, प्रशांत मिश्र, अमर सक्सेना, अभिव्यक्ति सिन्हा, राघव गुप्ता भी मुरादाबाद के साहित्य को समृद्ध कर रहे हैं, तो मुरादाबाद के साहित्यिक इतिहास पर शोध करने वाले डॉ. मनोज रस्तोगी एनसाइक्लोपीडिया जैसे हैं।

गजल की समृद्ध परंपरा ने भी प्रतिष्ठा व पहचान दी

- मुरादाबाद को गजल की समृद्ध परंपरा ने प्रतिष्ठा और पहचान दी है। मशहूर शायर मंसूर उस्मानी के सृजन से निरंतर पुष्ट हो रही गजल की खुशबूदार यात्रा मशहूर शायर ज़मीर दरवेश साहब, निजाम हातिफ, कमर कदीर इरम, अनवर कैफी, डॉ.कृष्ण कुमार नाज, ओमकार सिंह ओंकार, डा.मुजाहिद फराज, रिफत मुरादाबादी, कशिश वारसी, जिया जमीर तक की वरिष्ठ पीढ़ी और फरहत अली, नूररुज्जमा नूर, राहुल शर्मा, मनोज मनु, अंकित गुप्ता अंक, मोनिका मासूम, राशिद हुसैन, आरिफा मसूद अम्बर, सुल्तान अजहर, अहमद मुरादाबादी की नयी पीढ़ी तक आती है।

जिगर मुरादाबादी ने शायरी को दिया नया मुकाम...

- उर्दू साहित्य में मशहूर शायर जिगर मुरादाबादी के नाम से पहचाने जाने वाले अदबी शहर मुरादाबाद में गजल की यात्रा 17वीं शताब्दी में लाला नवलराय वफा की शायरी से शुरू होकर जकी मुरादाबादी, मदान अली खां राना, कमर मुरादाबादी, कैफ मुरादाबादी, सूफी अम्बा प्रसाद, किशन कुमार वकार, भगवत सरन मुमताज, काजी शौकत हुसैन, कियाफत अली काफी, गौहर उस्मानी, सतीश फिगार, शाहिद अहसन, सलीम कैफी, दिलकश आफरीदी, हैरत मुरादाबादी, शहाब मुरादाबादी, गगन भारती, जावेद रशीद आमिर, डॉ.मीना नकवी से होती हुई वर्तमान तक पहुंची है।

लेखक – योगेन्द्र वर्मा 'व्योम' नवगीतकार मुरादाबाद।

बच्चों के चेहरे पर शिक्षा की मुस्कान बिखेरनी वाली 'वीरांगना'

'पिता के देहांत के बाद मुझे स्कूल छोड़ना पड़ा था। तीन-चार साल की उम्र तक पैरों में चप्पलें तक नहीं होती थीं। ऐसे में स्कूल फीस भरना मां के लिए बहुत मुश्किल था। सरकारी स्कूल में किसी तरह पढ़ाई की। इसी दौरान ठान लिया कि जो मेरे साथ हुआ, किसी और बच्चे के साथ नहीं होगा। मां-बाप नहीं होने पर आर्थिक चुनौतियों की वजह से किसी बच्चे को पढ़ाई नहीं छोड़ने दूंगी।' बस फिर क्या था, समाज से अलग-थलग हो चुके बच्चों को मुख्य धारा से जोड़ने का जुनून सवार हो गया। यह कहानी वीरांगना स्कूल की संचालिका गुंजन बिष्ट की है।

हल्द्वानी के बरेली रोड स्थित मंगल पड़ाव पर वीरांगना नामक शिक्षा केंद्र संचालित है। यह शहर के निजी स्कूलों से अलग इसलिए है, क्योंकि यहां बच्चों को पढ़ने के लिए फीस नहीं देनी पड़ती है, इसके विपरीत पेंसिल, किताबें, यूनिफार्म स्कूल से मिलती हैं। यही नहीं, बच्चों की पढ़ाई में कोई बाधा न आए, इसलिए उनके घरों में स्कूल की तरफ से राशन तक भरवाया जाता है। इस स्कूल में ऐसे बच्चों को दाखिला मिलता है, जिन्हें समाज साथ नहीं बिठाना नहीं चाहता है। इस स्कूल को संचालित करती हैं गुंजन बिष्ट।

समाज और शिक्षा से उपेक्षित बच्चों का भविष्य संवारने में जुटी हैं गुंजन बिष्ट

भीख मांगने और कूड़ा बीनने वाले बच्चों को शिक्षा से जोड़ा

- सड़क पर गंदे, मैले कपड़े पहने भिक्षा मांगने वाले... और नालियों के किनारे व कूड़े के ढेर से प्लास्टिक बीनने वाले बच्चे गुंजन बिष्ट के स्कूल में पढ़ते हैं। गुंजन बताती हैं कि वर्ष 2000 में परिवार के साथ पहाड़ से हल्द्वानी आकर प्राइवेट जॉब करने लगीं। वर्ष 2008 में शादी हो गई। इसी दौरान रोडवेज बस स्टेशन से निकलते समय गंदे कपड़े पहने एक मासूम बच्चे को भीख मांगते देखा। उनकी बचपन की टीस जाग गई। ठान लिया कि अब ऐसे बच्चों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ना है। इसके लिए वह ढोलक बस्ती पहुंचीं, जहां के बच्चे दिन भर भीख मांगते, कूड़ा बीनते थे, लेकिन स्कूल नहीं जाते थे। उन्होंने बच्चों के मां-बाप को समझाया और स्कूल में दाखिला देने के लिए प्रेरित किया। बच्चों को बुनियादी शिक्षा देना शुरू की। इसी से वीरांगना शिक्षा केंद्र की नींव पड़ी। वर्ष 2013 में घर के नीचे गोदाम में शिक्षा केंद्र खोला और 2018 में इसका गैर सरकारी संगठन के रूप में पंजीयन कराया।

शुरू में बच्चों को दिहाड़ी दी, ताकि रोज आएं स्कूल

- गुंजन ने बताया शुरू में यह समस्या आयी कि वह जब बच्चों को घर से स्कूल लाने के लिए पहुंचती थीं, तो अक्सर मां-बाप कमाई नहीं होने के डर से बच्चों को इधर-उधर कर देते थे। इस पर बच्चों को उनकी दिहाड़ी देनी शुरू की ताकि बच्चे रोज आएं। धीरे-धीरे बच्चे बढ़ते गए। लेकिन चुनौती अभी भी बरकरार थी। इन बच्चों के न तो जन्म प्रमाण पत्र थे न आधार कार्ड। स्वास्थ्य टीके भी नहीं लगे थे। प्रशासनिक और स्वास्थ्य अफसरों के पास दौड़ लगाकर उनके जरूरी दस्तावेज बनवाए और टीके लगवाए। इसके बाद बच्चों का सरकारी स्कूलों में दाखिला कराया। धीरे-धीरे बच्चों और उनके मां-बाप को शिक्षा का महत्व समझ आने लगा।

शिक्षा केंद्र में कक्षा एक से 11 तक के पढ़ते 305 बच्चे

- गुंजन के शिक्षा केंद्र में इस समय 305 बच्चे पढ़ रहे हैं। वह गर्व से बताती हैं कि चार बच्चों का शिक्षा का अधिकार अधिनियम में प्रमुख कॉन्वेंट स्कूल में दाखिला हो गया है। एक बच्चा 11वीं और छह बच्चियां 9वीं कक्षा में पढ़ रही हैं। 25 बच्चों को स्कूल में दाखिले के लिए तैयार किया जा रहा है, बाकी बच्चे कक्षा एक से 10वीं तक की पढ़ाई करते हैं।

हर माह अपने वेतन से देतीं हैं 15 हजार रुपये

- गुंजन नैनीताल कोऑपरेटिव बैंक में कैशियर हैं। वह अपनी सैलरी से हर माह 15 हजार रुपये घुमंतू और भिक्षावृत्ति छोड़कर पढ़ने वाले बच्चों की कॉपी-किताबों, स्टेशनरी, यूनिफॉर्म, जूते पर खर्च करती हैं। उनके पति भी खाली समय में बच्चों को पढ़ाते हैं।

वीर योद्धा तीलू रौतेली पुरस्कार से सम्मानित

- गुंजन के जज्बे को सरकार ने भी सराहा है। वर्ष 2023 में उन्हें तीलू रौतेली पुरस्कार से सम्मानित किया गया। तीलू रौतेली गढ़वाल की वीर योद्धा थीं। तीलू से ही प्रेरित होकर गुंजन ने अपने स्कूल का नाम वीरांगना रखा है।

लेखक: अंकुर शर्मा, हल्द्वानी